बी.ए./खण्ड-प्रथम हिन्दी (प्र0) अध्ययन सामग्री
डॉ0 संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी.
दिनांक: 08.04.2021

पत्र: द्वितीय/प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

'कबीर को वाह्याडम्बर से चिढ़ थी।'

कबीर एक संत कवि थे। वास्तव में पहले एक सच्चे समाजसुधारक थे। वे सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। उस समय समाज में धर्म, संप्रदाय, जाँत-पाँत, ऊँच-नीच, धर्म का प्रारवण्ड, पंडित-मौलवियों का पारवण्ड आदि समाज में व्याप्त था। वे इन सब से हटकर दया, प्रेम आपसी भाईचारा, अहिंसा, प्रेम से युक्त धर्म के सामान्य स्वरूप में ही विश्वास रखते थे।

वे अपने समय में समाज या धर्म के क्षेत्र में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ खुलकर बोले। उन्होंने सदैव अंध-विश्वास का खंडन किया। वे सभी को एक ब्रह्म का पुत्र मानते थे। वे हिन्दु मुस्लिम में एकता स्थापित करने का सदैव प्रयास किए। उन्होंने दोनों ही धर्म में व्याप्त अच्छाईयों को आत्मसात किया क्योंकि वे गुरु रामानंद के शिष्य थे और दूसरी तरफ उनके ऊपर सूफी संतों का भी प्रभाव था लेकिन फिर भी वे दोनों धर्म में व्याप्त कुरीतियों पर खुलकर बोलते हैं। वे कहते हैं —

"काकर पाथर जोरि के मसजिद लई चुनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे क्या बहिरा हुआ खोदाय।।"

अर्थात् वे हिन्दु-मुस्लिम दोनों को आरे हाथों लेते हैं और मूर्ति-पूजा, अजान आदि का विरोध करते हैं। फिर वे धर्म के ठेकेदारों का विरोध करते हुए कहते हैं कि —

जो तू बाभन-बभनी जाया तो आनि बाट है क्यों नही आया।
जो तू तुरक-तुरकनी जाया, तो भीतर खतना क्यों न कराया।

झूठे संस्कारों, आडंबरों पर वे खुलकर समाज का विरोध किए।

इसी प्रकार उन्होंने व्रत, तीर्थ, रोजा, नमाज को केवल बाहरी दिखावा बताया। उन्होंने कहा कि आत्मा के उद्धार से इसका कोई संबंध नहीं है।

इसी प्रकार गंगा स्नान पर भी उन्होंने विरोध करते हुए कहा —

"लौकी अड़सठ तीरथ नहाई करुआपन तउ नहीं जाई।"

कबीर ने एक दूसरे की निन्दा करने वाले को भी सावधान किया और उन्होंने इससे बचने की बात कहीं और आपने अपने अंदर के दोषों को दूर करने की बात कही।

वे देशाचार, कुलाचार, अनेक सामाजिक रीति-रस्म, सदाचार इत्यादि को बाहरी आचरण मानते थे। साखी में वे मूर्ति-पूजा का विरोध करते हुए कहते हैं-

"पाहन पूजे हरि मिलें तो मैं पूजूँ पहार।
ताते यह चाकी भली पीस खाय संसार।।"

कबीर स्वाधीन चिंतन के पुरुष थे। उन्होंने समयानुरूप समाज की भलाई के लिए जो बातें उचित समझीं, उसे समाज के सामने रखा।

डॉ. बच्चन सिंह ने कबीर को "रैडिकल सुधारक" कहा है। वे धर्म के माध्यम से समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना चाहते थे। वे कहते हैं — " वे कोई पंथ या संप्रदाय खड़ा करने के पक्षपाती नहीं थे। ..... सामंती समाज की जड़ता तोड़ने का जितना काम अकेले कबीर ने किया उतना अन्य संतों और सगुण मार्गियों ने मिलकर भी नहीं किया। अर्थात् वे बाह्याडम्बर का विरोध समाज को सही दिशा में ले जाकर मानव को एक सही जीवन देने के पक्षधर थे।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कबीर ने समाजगत दोषों का उन्मूलन बड़ी कुशलता से किया। जिसमें वे सफल भी हुए।